भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर
प्रश्न बैंक कक्षा-10 पाठ-बड़े भाई साहब

1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

उत्तर मस्ती करना कथा नायक का स्वभाव था l उसकी रुचि खेल कूद, कंकरियाँ उछालने, गप्पबाजी करने, काग़ज़ की तितलियाँ बनाने, उड़ाने, उछलकूद करने, चार दीवारी पर चढ़कर नीचे कूदने, फाटक पर सवार होकर उसे मोटर कार बना कर मस्ती करने में थी।

2. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई की स्वच्छंदता और मनमानी बढ़ गई। उसने ज़्यादा समय मौज-मस्ती में व्यतीत करना शुरू कर दिया। उसे लगने लगा कि वह पढ़े न पढ़े, अच्छे नंबरों से पास हो जाएगा। उसे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया।

3. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों आदि की तस्वीर बनाते, कभी एक ही शब्द कई बार लिखते तो कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नक़ल करते। कई बार ऐसी शब्द रचना करते जिसका कोई अर्थ नहीं होता था।

4. बड़े भाई को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

उत्तर बड़े भाई की उम्र छोटे भाई से पाँच वर्ष अधिक थी। वे होस्टल में छोटे भाई के अभिभावक के रूप में थे। उन्हें भी खेलने, पतंग उड़ाने, तमाशे देखने का शौक था परंतु अगर वे ठीक रास्ते पर न चलते तो भाई के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी नहीं निभा पाते। अपने नैतिक कर्तव्य का बोध होने के कारण उन्हें अपने मन की इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं। वे अपने छोटे भाई को अच्छी शिक्षा देना चाहते थे।

5.बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर छोटा भाई अभी अनुभवहीन था। वह अपना भला-बुरा नहीं समझ पाता था। यदि बड़े भाई साहब उसे डाँटते- फटकारते नहीं, तो वह जितना पढ़ता था, उतना भी नहीं पढ़ पाता और अपना समय खेलकूद में ही गँवा देता। उसे बड़े भाई की डाँट का डर था। इसी कारण उसे शिक्षा की अहमियत समझ में आई, विषयों की कठिनाइयों का पता लगा, अनुशासित होने के लाभ समझ में आए और वह अव्वल आया।

6. बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनसे सहमत हैं?

उत्तर बड़े भाई साहब ने समूची शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि आजकल विद्यार्थियों को जो कुछ भी पढ़ाया जा रहा है , उससे उनके वास्तविक जीवन का कोई लेना-देना नहीं है । यह शिक्षा अंग्रेज़ी बोलने, लिखने, पढ़ने पर ज़ोर देती है। आए या न आए, पर उस पर बल दिया जाता है। रटने की प्रणाली पर भी ज़ोर है।

अर्थ समझ में आए न आए, पर रटकर बच्चा विषय में पास हो जाता है। साथ ही अलजबरा, ज्योमेट्री निरंतर अभ्यास के बाद भी ग़लत हो जाती हैं। अपने देश के इतिहास के साथ दूसरे देश के इतिहास को भी पढ़ना पड़ता है जो ज़रूरी नहीं है। छोटे-छोटे विषयों पर लंबे-चौड़े निबंध लिखने के लिए कहा जाता है। ऐसी शिक्षा जो लाभदायक कम और बोझ ज़्यादा हो, ठीक नहीं होती है। यह पढ़ाई-लिखाई उनके जीवन में कोई बदलाव लाने वाली नहीं है। यह पढ़ाई उन्हें किसी प्रकार से आत्मनिर्भर बनाने में भी सक्षम नहीं है। अतः हम लेखक के विचारों से पूर्णतः सहमत हैं।

7. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

उत्तर बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ अनुभव से आती है। उनका मत है कि किताबें पढ़ने से मनुष्य विद्या तो ग्रहण कर सकता है किंतु जीवन जीने की समझ ज़िंदगी के अनुभव से आती है। अधिक पढ़ा-लिखा होने से व्यक्ति विद्वान तो बन सकता है लेकिन उसमें जीवन की समझ नहीं होती। कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अनुभवी हो सकता है और सफल जीवन बिता सकता है। बड़े भाई साहब ने अम्माँ, दादा व हेडमास्टर की बूढ़ी माँ के उदाहरण दिए हैं। वे पढ़े-लिखे न होने पर भी हर समस्या का समाधान आसानी से कर लेते हैं। उन्होंने यह कहा कि घर का इंतज़ाम करने में हेडमास्टर साहब की डिग्री बेकार हो गई। खर्च पूरा न पडता था। जब से उनकी माता ने प्रबंध अपने हाथ में लिया जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है। अतः बड़े भाई साहब जीवन के इसी अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्व देते हैं।
अनुभवी व्यक्ति को जीवन की समझ होती है, वे हर परिस्थिति में अपने को ढालने की क्षमता रखते हैं।

8. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए l

उत्तर बड़े भाई साहब अध्ययनशील हैं, हमेशा किताब खोले बैठे रहते हैं, घोर परिश्रमी हैं। चाहे उन्हें समझ में न भी आए, परिश्रम करते रहते हैं। वह वाक्-पटु भी हैं, छोटे भाई को तरह- तरह से समझाते हैं। उन्हें बड़प्पन का अहसास है। इसलिए वह छोटे भाई को अपने अनुभवी होने से जीवन में अनुभव की महत्ता समझाते हैं।
उनकी कुछ विशेषताओं पर इस प्रकार प्रकाश डाला जा सकता है –-
i) छोटे भाई का हितैषी – बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई का भला चाहने वाले हैं। वे निरंतर उसे अच्छाई की ओर प्रेरित करते हैं। वे चाहते हैं कि उनका छोटा भाई किसी तरह पढ़-लिख जाए। इसी कारण वे उस पर क्रोधित भी होते रहते हैं और पूरा नियंत्रण भी रखते हैं।
ii) गंभीर – बड़े भाई साहब गंभीर प्रवृत्ति के हैं। वे हर समय किताबों में खोए रहते हैं। वे अपने छोटे भाई के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते हैं इसलिए वे सदा अध्ययनशील रहते हैं।
iii) वाक् कला में निपुण – बड़े भाई साहब वाक् कला में निपुण हैं। वे अपने छोटे भाई को ऐसे-ऐसे उदाहरण देकर समझाते हैं कि वह उनके सामने नतमस्तक हो जाता है। उन्हें शब्दों को सुंदर ढंग से प्रस्तुत करना आता है।
iv) वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विरोधी – बड़े भाई साहब के अनुसार वर्तमान शिक्षा प्रणाली किसी प्रकार से लाभदायक नहीं है। यह विद्यार्थियों को कोरा किताबी ज्ञान देती है जिसका वास्तविक जीवन में कोई लाभ नहीं होता। वे ऐसी शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए इसे दूर करने की बात कहते हैं।

9. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्त्वपूर्ण कहा है?
उत्तर बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। जो ज्ञान बड़ों को है, वह पुस्तकें पढ़ कर हासिल नहीं होता है। ज़िंदगी के अनुभव उन्हें ठोस धरातल देते हैं, जिससे हर परिस्थिति का सामना किया जा सकता है। पुस्तकें व्यवहार की भूमि नहीं होती हैं। ग़लत-सही, उचित-अनुचित की जानकारी अनुभवों से ही आती है। अत: जीवन के अनुभव किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

10. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?
उत्तर बड़े भाई द्वारा बुरी तरह लताड़े जाने पर छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबल बना डाला। उसने सोचा कि अब वह खूब जी लगाकर पढ़ाई करेगा और खेल-कूद की ओर ध्यान नहीं लगाएगा। सुबह छह से साढ़े नौ तक पढ़ाई, फिर स्कूल, स्कूल से वापस आकर आधा घंटा आराम और फिर रात ग्यारह बजे तक पढ़ाई। उसने टाइम-टेबल में खेल-कूद का समय भी निर्धारित नहीं किया। लेकिन पहले दिन ही टाइम-टेबल की अवहेलना शुरू हो गई। उसे खेल-कूद की याद सताने लगी। उसे मैदान की सुखद हरियाली , हवा के हल्के-हल्के झोंके तथा फुटबॉल ,वॉलीबॉल ,कबड्डी आदि खेलों का आनंद अपनी ओर खींचने लगा। वह खेल-कूद में शरीक होने लगा। इस प्रकार टाइम-टेबल बनाकर भी वह उसका पालन नहीं कर पाया।

11. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?
उत्तर एक दिन जब छोटा भाई गुल्ली-डंडा खेलने के बाद भोजन के समय लौटा तो बड़े भाई साहब उस पर बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने उसे डाँटते-फटकारते हुए कई तरह से समझाने का प्रयास किया। बड़े भाई ने कहा कि उसे अपने पास होने का घमंड नहीं करना चाहिए। उन्होंने रावण , शैतान और शाहेरूम का उदाहरण देकर समझाया कि घमंड करने से बड़े-से-बड़े व्यक्ति का भी नाश हो जाता है। उन्होंने उसके परीक्षा में पास होने को भी केवल एक संयोग बताया। यह भी कहा कि बड़ी कक्षाओं में पढ़ाई बहुत कठिन होगी, इसलिए उसको खेल-कूद में समय गँवाना छोड़कर पढ़ाई में मन लगाना चाहिए।

12. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?
उत्तर परीक्षा में दूसरी बार भी छोटे भाई के पास होने पर छोटा भाई पढ़ाई-लिखाई से दूर हो गया। एक दिन जब वह एक पतंग के पीछे दौड़ रहा था तो बड़े भाई ने उसे पकड़ लिया। उन्होंने उसे बुरी तरह फटकारा। उनके द्वारा दिए गए तर्क और उदाहरण इतने सटीक थे कि छोटा भाई हैरान रह गया। बड़े भाई साहब उसे अपने माता-पिता और हेडमास्टर साहब का उदाहरण देकर समझाते हैं कि जीवन में अनुभव की अधिक आवश्यकता है। उन्होंने यह कहा कि वे उससे पाँच साल बड़े हैं और अनुभवी हैं इसलिए उसे डाँटने-फटकारने और उसकी रक्षा करने का अधिकार उन्हें प्राप्त है। बड़े भाई साहब की ऐसी विद्वतापूर्ण बातें सुनकर छोटे भाई के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई।